उपसंहार

स्वातंत्र्योत्तर भारतीय जन-जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन परिलक्षित होता है। यंत्रीकरण और औद्योगीकरण से उद्भूत विकास की नयी दिशाओं के परिणामस्वरूप प्राचीन रूढ मान्यताओं के विरुद्ध विद्रोह के स्वर मुखरित होने लगे। प्राचीन जीवन-मूल्य आधुनिक जीवन-मूल्यों से भिन्न थे। स्वातंत्र्योत्तर भारत में सामाजिक मूल्यों में भी परिवर्तन परिलक्षित होता है।बौद्धिकता तथा विज्ञान के विकास के साथ जनसंचार में माध्यमों के विस्तृत विकास से विश्व संस्कृतियाँ परस्पर निकट आ ~~गयीं।परस्पर विघटन आ गयीं। इसलिए संस्कृतियाँ परस्पर निकट आ~~ गयीं। इसलिए विश्व के समाज में सामाजिक विघटन की कई प्रवृत्तियां संपन्न हुई। भारत का सामाजिक जीवन भी इससे नहीं बचा। भारत में पारिवारिक तथा दांपत्य जीवन-संबंधी मूल्यों और नैतिकता संबंधी मान्यताओं में बदलाव परिलक्षित हुआ। इस बदलाव का चित्रण आधुनिक कथाकर अपनी कथा-रचनाओं में करने लगे।

प्राचीन भारत में स्त्रियों का कार्य-क्षेत्र घर में सीमित था, तो स्वातंत्र्योत्तर भारत में स्त्रियाँ अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व स्थापित करना चाहती हैं और वे पुरुष के कंधे से कंधे मिलाकर काम करती हैं। वर्तमान स्त्रियों के कार्यों की सफलता पर विचार करें तो देखा जाता है कि अधिकांश कार्य-क्षेत्रों में स्त्रियाँ या तो पुरुष के आगे हैं या समान हैं। विरले ही कार्यों में स्त्रियां पुरुषों के पीछे रहती हैं। स्वातंत्र्योत्तर कथा-लेखन में भी स्त्रियों का स्थान अग्रिम पंक्ति में हैं। आधुनिक कथा-लेखिकाओं ने वैयक्तिक मूल्यों में संक्रमण के परिणामस्वरूप दांपत्य जीवन और पारिवारिक जीवन के विघटन पर तथा आधुनिक समाज में

नारी -चेतना पर अपनी दृष्टि मूलतः केंद्रित की है। तत्कालीन राजनीतिक, आर्थिक तथा धार्मिक स्थितियों को भी उन्होंने विषय बनाया है, किन्तु ये उनके गौण विषय रहे हैं। स्वयं नारी होने के नाते परिवार और समाज में नारी वर्ग की कठिनाइयाँ तथा वैयक्तिक स्वतंत्रता चाहनेवाली आधुनिक शिक्षित तथा चिंतनशील आधुनिक नारी की संदर्भानुसार जागृति का चित्रण लेखकों की अपेक्षा लेखिकाएँ ही स्वाभाविकता और सच्चाई के साथ कर सकती हैं और कर रही हैं।

आधुनिक कथा-साहित्य में नये मूल्यों की खोज होती है। आधुनिक नारी के स्वतंत्र अस्तित्व की चिन्ता उसका कामकाजी रूप, उसका 'अहं' आदि का साक्ष्य मन्नू भण्डारी के प्रथम उपन्यास 'आपका बंटी' में उपलब्ध होता है। प्रस्तुत उपन्यास वर्तमान महानगरीय ज़िन्दगी की ऐसी विडंबना का बोध देता है कि शिक्षित माता-पिता 'अहं वादी' होने से उनका दांपत्य जीवन विघटित होता है और उनकी संतानों का जीवन दुखःपूर्ण होता है। प्रस्तुत उपन्यास में बालक बंटी के माता-पिता शकुन और अजय शिक्षित हैं, स्वयं कमानेवाले हैं। वे अहं के भाव से ग्रस्त होने के कारण उनके दांपत्य जीवन में कोई मेल-जोल नहीं है। दांपत्य जीवन में तनाव बढने पर दोनों एक दूसरे से कटकर रहने लगते हैं। आखिर दोनों अलग शादी भी करते हैं, जिससे बेटा बंटी अकेला-सा होता है और उसे होस्टल में डाल दिया जाता है। बंटी अनाथ-सा होता है। 'वे दिन'(निर्मल वर्मा), 'अंधेरे बंद कमरे' (मोहन राकेश), 'कडियाँ' (भीष्म साहनी) आदि उपन्यासों में खंडित दांपत्य जीवन का चित्रण किया गया है। 'आपका बंटी' में माता-पिता के विघटित दांपत्य जीवन का फल भोगनेवाले बंटी की समस्या मनोवैज्ञानिक है तो आर्थिक कारणों से बच्चे के एक दुखःपूर्ण जीवन का चित्रण करनेवाला उपन्यास है 'उसका बचपन'(कृष्णा बलदेव वैद)। 'आपका बंटी' में बाल मनोविज्ञान ही

नहीं, अपितु शकुन तथा अजय के माध्यम से अकेलापन, पारिवारिक विघटन, कुंठा, व्यक्ति की संक्रान्त मनःस्थिति, अहं, मूल्य - संक्रमण आदि आधुनिक प्रवृत्तियों का चित्रण भी किया गया है।

अन्य लेखिकाओं की तुलना में मन्नू भण्डारी की विशेषता यह है कि उनके कथ्य वैविध्य पूर्ण है। 'आपका बंटी' आधुनिक मनोवैज्ञानिक उपन्यास है तो उनका राजनीतिक - सामाजिक उपन्यास है 'महाभोज'। 'महाभोज' में मन्नू भण्डारी द्वारा तत्कालीन राजनीति को औपन्यासिक रूप दिया गया है और वह हिन्दी का श्रेष्ठ उपन्यास भी निकला तो उसमें आश्चर्य की बात नहीं है। क्योंकि बचपन में ही मन्नू भण्डारी तत्कालीन राजनीति की ओर आकृष्ट थीं और उनके पिता भी एक राजनीतिक पुरुष थे। उनके पिताजी अपनी बेटी की व्यक्ति-स्वतंत्रता में कभी हस्तक्षेप नहीं करते थे। उनके पति श्री राजेन्द्र यादव भी हिन्दी के विख्यात कथाकार हैं। घर में ही साहित्य संबंधी चर्चा करने का वातावरण सुगम होने के कारण कोई भी कठिन विषय बडी तन्मयता के साथ मन्नूजी चित्रित कर सकती थीं।

वर्तमान स्वार्थी राजनीतिज्ञ, जिनकी कथनी और करनी में आकाश - पाताल का अंतर है तथा जिन्हें पूरा समझना मुश्किल है, ऐसे राजनीतिज्ञों का प्रतिरूप है 'महाभोज' उपन्यास का दा साहब। आधुनिक भ्रष्टाचारी कपट अफ़सरों का प्रतिनिधि है डी. ऐ. जी. सिन्हा। अकेला एक अफ़सर आदर्शवान या सच्चा निकलने से वह कुछ भी नहीं कर सकता, अपनी भलाई का कुपरिणाम ही उसे झेलना पडेगा, इसका दृष्टांत है प्रस्तुत उपन्यास का एस.पी. सक्सेना। पूँजीपतियों तथा जन-नेताओं की इच्छा के विरुद्ध कार्य करने से उसका तबादला होता है और अंत में निलंबित होता है।

मन्नू भण्डारी ने दो बालोपयोगी उपन्यास लिखे हैं - 'आसमाता' और 'कलवा'। 'आसमाता' उपन्यास में आशा को छोडे

बिना सभी दिक्कतों का सामना करने का उनका जीवन- दर्शन स्पष्ट होता है। इस उपन्यास के वीरसिंह की सफलता यही सूचित करता है - कि आशावान होने से तथा निस्वार्थ सेवा का मार्ग स्वीकार करने से आगे बढने का कोई भी रास्ता सामने खुलेगा। इसमें अहंवादी, स्वार्थी 'प्यारी-राणी' आधुनिक नारी का प्रतीक है। जीवन में उसका सारा वैभव नष्ट होने तथा निष्कलंक , निस्वार्थ , कर्मपरायण , पतिव्रता बिचारी राणी की शरण में प्यारी राणी के आने के चित्रण के पीछे भी लेखिका का जीवन - दर्शन है।' कलवा' उपन्यास में अहंभाव वाले राजपुत्र का पतन तथा आदर्शवान कर्मठ कलवा की उन्नति की कथा है। राजपुत्र को अनुचित उपदेश देकर पतन की ओर ले जानेवाला तथा अपनी स्वार्थ-सिद्धि करनेवाला 'कलवा' उपन्यास का वणिक पुत्र आधुनिक राजनीतिज्ञों के सहायकों या सलाहकारों का प्रतीक है। शासक मंडल के अन्य व्यक्ति बुरे हैं या सच्चे नहीं है तो शासक की उन्नति के बदले अवनति ही होगी। इसका प्रमाण है 'कलवा' उपन्यास में राजकुमार का पतन।

मन्नू भण्डारी तथा उनके पति राजेन्द्र यादव के सहलेखन में लिखित 'एक इंच मुस्कान' में आधुनिक युवा-युवतियों के विवाहेतर प्रेम-संबन्ध, अकेलापन, दांपत्य विघटन, अहं, आदि का चित्रण किया गया है। इसमें अमर, रंजना और अमला अपने - अपने ढंग का जीवन व्यतीत करते हैं। इन पात्रों की निजी मान्यताएँ हैं। अर्थात् इस उपन्यास में व्यक्तिवादी जीवन-दर्शन की अभिव्यक्ति हुई है। इसमें पति परित्यक्ता अमला का, विवाहित अमर से अनैतिक संबन्ध होता है तथा अमर की पत्नी रंजना के प्रति उसके मन में ईर्ष्या-भाव है। अमर भी अपनी पत्नी की अपेक्षा अमला को चाहता है। आखिर अमला आत्महत्या करती है, रंजना पतिगृह त्यागने को बाध्य होती है। रंजना और अमर दोनों ही एकाकी जीवन का बोझ ढोने को बाध्य हो जाते हैं। इस उपन्यास में मन्नूजी यही समझाने का प्रयास करती हैं कि दांपत्य जीवन में समझौते

का अभाव पारिवारिक विघटन की भयानक समस्या का कारण बनता है। वर्तमान पारिवारिक संबन्धों का चित्रण करने के कारण प्रस्तुत उपन्यास को मन्नूजी का 'सामाजिक उपन्यास' मान सकता है।

शोषण के विरुद्ध आवाज़ उठानेवाली, चिन्तनशील, संघर्षशील आधुनिक नारी का प्रतिरूप है 'स्वामी'उपन्यास की मिनी। आधुनिक पढी-लिखी नारी में जो सजगता है, तार्किकता है, बौद्धिकता है, स्वाभिमान की भावना है- ये सारे भाव मिनी में दिखाई पडते हैं। हमारे समाज में आधुनिक व्यक्ति परंपरागत संस्कारों से हट जाना चाहता है तथा नया स्वीकार करना चाहता है। किन्तु परंपरागत पुराना संस्कार उसे पीछे खींचता है। आधुनिक व्यक्ति की इस द्वन्द्वात्मक स्थिति के बारे में 'स्वामी' उपन्यास की मिनी बताती है – "हम लोग पढ-लिख-सोच-विचार कर बौद्धिक रूप से बहुत आगे बढ जाते हैं। सदियों पुराने संस्कार हमें पीछे खींचते हैं और द्वन्द्व बराबर चलते रहते हैं। कुछ संस्कारों को हम तो पाते हैं, कुछ के आगे हम खुद टूट जाते हैं।"

मन्नूजी के उपन्यासों के विषय वैविध्यपूर्ण है, सभी उपन्यासों के पात्रों की प्रतिक्रिया मनोवैज्ञानिक है तथा सभी उपन्यासों के शीर्षक में भी मनोवैज्ञानिकता है। उनके उपन्यास ही नहीं,कहानियाँ भी मनोवैज्ञानिक हैं। अतः मन्नू जी पर कोई भी अध्येता अध्ययन करना चाहता है तो मन्नूजी के उपन्यासों या कहानियों की मनोवैज्ञानिकता को अध्ययन का विषय बना सकता है। अन्य किसी मनोवैज्ञानिक कथाकारों के कथापात्रों से मन्नूजी के कथापात्रों की तुलना भी कर सकता है। मन्नूजी के 'एक इंच मुस्कान' उपन्यास की अतृप्त नायिका अमला को अपने मन्द मुस्कान दूसरों से अपना आंतरिक घुटन छिपाने का कवच है। इसी मुस्कान के जाल में फँसकर अमर अपनी पत्नी रंजना, अपना लेखन सबकुछ नष्ट कर देता है। 'बंटी' को केन्द्र में रखकर लिखे गये 'आपका-

बंटी' उपन्यास में माँ-बाप के अनमेल संबन्ध से बेटे बंटी का जीवन समस्यामूलक हो जाने की कथा है। 'आपका बंटी' शीर्षक पाठकों के सामने यह मनोवैज्ञानिक सत्य खडा करता है कि माता-पिता के संबन्ध-विच्छेद तथा दूसरी शादी से बेटे बंटी को क्या हुआ? राजनीतिक परिवेश में लिखे गये 'महाभोज' उपन्यास में यह दिखाया गया है कि चुनाव के समय नेता कैसे विरोधियों तथा प्रतिकूल परिस्थितियों को मनोवैज्ञानिक प्रभाव डालकर अनुकूल करता है। 'आसमाता'उपन्यास में इस मनोवैज्ञानिक सत्य का उद्घाटन किया गया है कि आशा छोडे बिना आगे बढने से सभी विषम स्थितियों का सामना करके लक्ष्य पर पहुँच सकता है। 'कलवा' उपन्यास को नायक का नाम ही दिया गया है, जो आदर्शवान, कर्मठ राजनीतिज्ञ है। 'स्वामी' उपन्यास में लौकिक सुख भोगों को महत्व देनेवाली आधुनिक नारी का प्रतिरूप मिनी अन्त में आध्यात्मिक जीवन बिताने वाले तथा वैष्णव भक्त अपने पति घनश्याम का महत्व समझ लेती है और देवतुल्य अपने पति केलिए अपने को समर्पित करती है।

उषा प्रियंवदा के 'रुकोगी नहीं राधिका' उपन्यास की राधिका दो संस्कृतियों के पाट में पिसकर अकेलापन का अनुभव करती है। वह न विदेशी संस्कृति में फिट होती है न देशी संस्कृति में। मन्नू भण्डारी के 'आपका बंटी' उपन्यास में बालक बंटी माँ-बाप दोनों से कटकर मिसफिट होता है तथा अकेलापन अनुभव करता है। हमारेआधुनिक समाज में दृष्टि डालें तो हम देख सकते हैं कि इन दोनों उपन्यासों की ज़िन्दगियाँ प्रामाणिक हैं। 'राधिका', 'बंटी' जैसे मिसफिट होनेवाले तथा अकेलापन महसूस होनेवाले कथापात्रवाले आधुनिक उपन्यासों को कोई भी शोधकर्ता अपने शोध केलिए विषय बना सकता है।

यंत्रीकरण, दो महायुद्धों तथा अस्तित्ववादी चिन्तन के फलस्वरूप हमारे समाज में उद्भूत आधुनिकता को विषय बनाकर मोहन राकोश, निर्मल वर्मा, राजकमल चौधरी, नरेश मेहता, रमेश बख्शी, कृष्ण बलदेव

वैद जैसे आधुनिक कथा-लेखकों तथा उषा प्रियंवदा, मेहरुन्निसा परवेज़, कृष्णा सोबती, शिवानी, दीप्ती खण्डेलवाल जैसी कथा-लेखिकाओं ने आधुनिकता बोध के उपन्यास लिखे हैं। मन्नू भण्डारी भी इस कोटी में आती है। अतः मन्नू भण्डारी की तुलना उपर्युक्त किसी आधुनिक कथाकारों से करके अध्ययन करना भी अच्छा होगा।

मन्मथ नाथ गुप्त ('बहता पानी'), भैरव प्रसाद गुप्त('मशाल'), अमृतराय ('बीज', 'नागफणी का देश') काशिनाथ सिंह('अपना मोर्चा') जैसे आधुनिक सामाजिक उपन्यासकारों से मन्नू - भण्डारी के उपन्यासों की तुलना कर सकता है। मन्नूजी का 'महाभोज' उपन्यास राजनीतिक है, साथ ही सामाजीक भी। उनके अन्य उपन्यासों के विषय भी सामाजिक हैं। मन्नू भण्डारी का 'आपका बंटी' उपन्यास आधुनिकता बोध के उपन्यास के रूप में विख्यात है, तो 'महाभोज' उपन्यास राजनीतिक उपन्यास के रूप में विख्यात है। कोई भी शोधार्थी तत्कालीन राजनीतिक विडंबनाओं का चित्रण करनेवाले मन्नू जी की कथारचनाओं – 'महाभोज' उपन्यास, 'मैं हार गई' कहानी – का अन्य किसी राजनतिक कथाकारों की ऐसी रचनाओं से तुलनात्मक अध्ययन करके तत्कालीन राजनीतिज्ञों का सच्चा चित्र पाठकों के सामने ला सकता है। नागार्जुन के उपन्यासों में पाठक राजनैतिक - सांस्कृतिक साक्षात्कार कर सकते हैं। उनके उपन्यासों में राजनीतिक साक्षात्कार अधिक आया है और सांस्कृतिक साक्षात्कार कम। उनके 'रतिनाथ की-चाची' , 'बलचनमा', 'नयी पौध', 'दुःख मोचन', 'वरुण के बेटे' आदि आंचलिक उपन्यास राजनीतिक - सांस्कृतिक साक्षात्कार कर देनेवाले उपन्यास हैं। हिन्दी का पहला आंचलिक उपनयास 'मैला आंचल' (फणीश्वर-नाथ रेणु) इस कोटी का है। शोधार्थी इनमें से किसी उपन्यास से 'महाभोज' उपन्यास का तुलनात्मक अध्ययन कर सकता है। मन्नू भण्डारी स्वयं राजनीति में रुचि रखती थीं। अतः विभिन्न संदर्भों में उनके द्वारा दिये गये वक्तव्यों पर भी शोधार्थी का ध्यान जाना उचित होगा।